Check for updates

OPEN ACCESS

Volume: 4

Issue: 3

Month: September

Year: 2025

ISSN: 2583-7117

Published: 29.09.2025

Citation:

माधुरी शर्मा, डॉ. उषा वैद्य "महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सरकारी योजनाओं की भूमिका: एक समीक्षा" International Journal of Innovations in Science Engineering and Management, vol. 4, no. 3, 2025, pp. 408-416.

DOI:

10.69968/ijisem.2025v4i3408-416

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सरकारी योजनाओं की भूमिका: एक समीक्षा

माधुरी शर्मा [1], डॉ. उषा वैद्य [2]

[1] शोधार्थी, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र)
[2]प्राध्यापक, समाजशास्त्र, रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, रायसेन (म.प्र)

सारांश

महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र बनाना महिला सशक्तिकरण का मुख्य लक्ष्य है। लड़कियों को अच्छी शिक्षा देना महिला सशक्तिकरण का मुख्य लक्ष्य है। भारत सरकार इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए कई प्रकार की योजनाएँ, कार्यक्रम और पहल चला रही है। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को शिक्षा और प्रशिक्षण, रोजगार के अवसर, कौशल विकास, आर्थिक सहायता, कार्यस्थल पर सुरक्षा और अन्य ज़रूरी सुविधाएँ समान रूप से उपलब्ध कराना है। यह लेख भारत में महिला सशक्तिकरण के महत्व को उजागर करता है और बताता है कि सरकारी योजनाएँ किस तरह महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने में मदद करती हैं। इसमें महिला सशक्तिकरण में आने वाली चुनौतियों, महिला उद्यमियों को बढ़ावा देने वाली प्रमुख सरकारी योजनाओं और महिलाओं की शिक्षा से जुड़े मुख्य पहलुओं पर चर्चा की गई है। रिपोर्ट के अनुसार, मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया और WEP जैसी पहलें आर्थिक समावेशन, उद्यमिता, और सतत विकास को बढ़ावा देती हैं तथा महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक स्थिति को बेहतर बनाती हैं।

कीवर्ड; महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भर, सरकारी योजनाएँ, वित्तीय समावेशन, महिला उद्यमिता

प्रस्तावना

21वीं सदी में दुनिया तेजी से आगे बढ़ रही है, और महिलाएँ वैश्विक समाज तथा अर्थव्यवस्था के विकास में सक्रिय रूप से महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण सबसे महत्वपूर्ण तत्व माना जाता है, क्योंकि इससे निर्णय-निर्माण में महिलाओं की भागीदारी बढ़ती है। भारत एक विकासशील देश है, जहाँ पुरुष प्रधान समाज के कारण आर्थिक स्थिति काफी कमजोर रही है। [1] देश की लगभग आधी आबादी महिलाएँ हैं, लेकिन आज भी बड़ी संख्या में महिलाएँ बेरोजगार हैं और आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर हैं। परिवार, समाज और राष्ट्र के बेहतर भविष्य के लिए महिलाओं का सशक्तिकरण बेहद आवश्यक है। महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, आर्थिक रूप से मजबूत करना, आत्मसम्मान और आत्मविश्वास बढ़ाना तथा सामाजिक-राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना, ये सभी पहलू महिला सशक्तिकरण का हिस्सा माने जाते हैं। [2]

पिछले कई दशकों से महिला सशक्तिकरण विश्व-स्तर पर शोध और चर्चा का प्रमुख विषय बना हुआ है। भारत में भी लगभग हर सरकार ने इसे अपनी प्राथमिकता में रखा है। सरकार महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और आर्थिक अवसरों तक बेहतर पहुँच देने के लिए लगातार प्रयास कर रही है। [3] हालाँकि कई योजनाएँ शुरू की गई हैं, फिर भी विभिन्न सामाजिक-आर्थिक बाधाएँ महिलाओं के विकास को रोकती हैं। यही कारण है कि महिला सशक्तिकरण आज भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। भारत सरकार लगातार लिंग असमानता को कम करने और महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई कार्यक्रम लागू कर रही है। [4]

सरकार का उद्देश्य परिवार और समाज के समग्र विकास के लिए महिलाओं की स्थिति को मजबूत करना है। इसी दिशा में सरकार लैंगिक समानता को बढ़ावा दे रही है ताकि जीवन के हर क्षेत्र—परिवार, कार्यस्थल, सेना, और समुदाय में पुरुषों और महिलाओं को समान अधिकार और अवसर मिल सकें। [5] इसलिए आवश्यक है कि विकास के हर चरण में न्याय और लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाले कानूनों और नीतियों को प्रभावी रूप से लागू किया जाए। अभी भी कानूनी, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में महिलाएँ कई बार दूसरे दर्जे की नागरिक समझी जाती हैं, जिससे उनके जीवन की गुणवत्ता प्रभावित होती है। भारतीय संविधान महिलाओं के अधिकारों की रक्षा करता है और सरकार को ऐसे कदम उठाने का अधिकार देता है जो लैंगिक समानता और महिला सशक्तिकरण को आगे बढ़ाएँ। [6]

भारत में महिला सशक्तिकरण का महत्व

प्राचीन भारतीय ग्रंथों और शास्त्रों का अध्ययन करने पर पता चलता है कि उस समय महिलाएँ काफी शक्तिशाली, शिक्षित और सम्मानित थीं। उनके आसपास ही सभ्यताएँ फलती-फूलती थीं। लेकिन समय के साथ लगातार हुए आक्रमणों और संघर्षों ने समाज की संरचना को कमजोर कर दिया। इस अंधकारमय काल में महिलाओं को हिंसा, शोषण और अत्याचारों का सामना करना पड़ा। [7]

आज भी, कारण चाहे जो हो, दुनिया भर में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए संघर्ष जारी है। यह समस्या हर गुजरते दिन के साथ और गंभीर होती जा रही है। इसी वजह से भारत सरकार ने महिलाओं के लिए कई सशक्तिकरण योजनाएँ शुरू की हैं। ये योजनाएँ महिलाओं को नेतृत्व की ओर आगे बढ़ाती हैं और महिला-प्रधान विकास का रास्ता तैयार करती हैं। [8]

अब सवाल उठता है—भारत में महिलाओं के लिए सशक्तिकरण योजनाओं की आवश्यकता क्यों है? इसके कुछ स्पष्ट और महत्वपूर्ण कारण हैं:

- **GDP में वृद्धि:** महिलाएँ देश की आधी आबादी हैं। वे कई क्षेत्रों में अपनी भागीदारी से भारतीय अर्थव्यवस्था को मजबूत बना सकती हैं।
- **शिक्षा:** शिक्षित महिला समाज को बेहतर बनाने की क्षमता रखती है। क्या आपको वह प्रसिद्ध अफ्रीकी कहावत याद है? "एक महिला को शिक्षित करने का मतलब है पूरे राष्ट्र को शिक्षित करना, जबकि एक पुरुष को शिक्षित करना केवल एक व्यक्ति को शिक्षित करना है।"
- **गरीबी से लड़ाई:** यदि एक परिवार में अधिक कमाने वाले सदस्य हों, तो गरीबी कम होती है। विशेषकर बहुआयामी गरीबी को समाप्त करने में महिलाओं का सशक्त होना बहुत मदद करता है।
- **सामाजिक न्याय:** हमारे संविधान में समानता और न्याय का वादा किया गया है। महिलाओं को सशक्त

बनाकर समाज में गहराई तक फैली लैंगिक असमानता को समाप्त किया जा सकता है।

- **स्वास्थ्य में सुधार:** हमारी दादियों-नानियों के घरेलू उपचार याद हैं? सशक्त महिलाएँ प्रिवेंटिव हेल्थकेयर में अहम भूमिका निभा सकती हैं, जिससे बीमारियों की संख्या कम होगी और उपचार की लागत भी घटेगी।

आत्मनिर्भर भारत की दिशा में सशक्तिकरण से जुड़े मुद्दे

महिलाओं का सशक्तिकरण एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है। इसके लिए निरंतर मेहनत और प्रयास की आवश्यकता होती है। तभी महिलाओं की सोच को बदला जा सकता है और उन्हें एक आत्मनिर्भर भारत की दिशा में आगे बढ़ाया जा सकता है। सशक्तिकरण को प्रभावी बनाने के लिए कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। [6] नीचे प्रमुख समस्याएँ दी गई हैं:

- **समाज का विरोध:** महिलाओं में होने वाले बदलावों को समाज हमेशा आसानी से स्वीकार नहीं करता। समाज के कई निर्णय पुरुषों द्वारा लिए जाते हैं, इसलिए पक्षपात दिखाई देता है। कई बार महिलाओं और समाज की पारंपरिक सोच के बीच टकराव भी पैदा हो जाता है।
- **चरित्र पर आरोप:** जिम्मेदार और मेहनती महिलाएँ घर और कार्यस्थल दोनों जगह कई लोगों से मिलती-जुलती हैं। जैसे-जैसे महिलाएँ अपने करियर में आगे बढ़ती हैं, उनके बारे में अफवाहें फैलने लगती हैं। कई बार उनके चरित्र पर सवाल उठाए जाते हैं, जो न सिर्फ गलत है बल्कि उनके आत्मविश्वास को भी चोट पहुँचाता है।
- **महिलाओं की मानसिकता:** जब समाज आलोचना करता है, अफवाहें फैलती हैं और लगातार विरोध होता है, तो महिलाएँ खुद को कम आँकने लगती हैं। इससे आत्मविश्वास की कमी हो जाती है और वे आगे बढ़ने में संकोच महसूस करती हैं।
- **अनुकूल वातावरण का अभाव:** महिलाओं की प्रगति के लिए समाज में सहयोगी वातावरण होना ज़रूरी है। लेकिन कई जगहों पर ऐसा माहौल नहीं मिलता। नतीजा यह होता है कि कई महिलाएँ अवसर मिलने के बावजूद सफल नहीं हो पातीं।
- **व्यापक गरीबी:** भारत में फैली गरीबी महिलाओं के सशक्तिकरण की सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है। आर्थिक कमजोरी के कारण महिलाएँ शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार से दूर रह जाती हैं।
- **शिक्षा में भेदभाव:** भारत में अब भी लड़कों और लड़कियों के बीच शिक्षा को लेकर भेदभाव मौजूद है। कई लड़कियों को उच्च शिक्षा का अवसर नहीं मिलता, जिससे उनके विकास पर सीधा असर पड़ता है।
- **काम और वेतन में असमानता:** महिलाएँ पुरुषों जितना या उससे अधिक काम करती हैं, फिर भी उन्हें कम वेतन मिलता है। लंबे समय तक काम करने के बावजूद उचित भुगतान न मिलना उनकी कार्यक्षमता को कम कर देता है और आत्मनिर्भर बनने की राह कठिन हो जाती है।
- **सामाजिक पूर्वाग्रह और पितृसत्तात्मक सोच:** कई लोग मानते हैं कि महिलाओं को घर से बाहर काम नहीं करना चाहिए। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में महिलाओं को निचले स्तर के काम दिए जाते हैं और उनकी राय को महत्त्व नहीं दिया जाता। इस सोच के कारण सशक्तिकरण की प्रक्रिया धीमी हो जाती है।

- **ग्रामीण, धार्मिक और पारंपरिक बंदिशें:** ग्रामीण क्षेत्रों में कई महिलाएँ धार्मिक नियमों, परंपराओं और सामाजिक बंधनों के कारण घर तक सीमित रहती हैं। उन्हें बाहरी दुनिया का अनुभव नहीं मिल पाता, जिससे उनका विकास रुक जाता है और आत्मनिर्भरता संभव नहीं हो पाती।
- **निर्णय लेने की क्षमता और कौशल की कमी:** हालाँकि महिलाएँ निर्णय लेने में सक्षम होती हैं, लेकिन कई बार पुरुष उनके निर्णयों में हस्तक्षेप करते हैं। कौशल की कमी भी उनकी प्रगति में बाधा बनती है और देश के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में रुकावट पैदा करती है।
- **अन्य समस्याएँ:** परिवार में महिलाओं का दर्जा, समाज की सोच, महिलाओं के प्रति नकारात्मक रवैया, और उनके व्यवहार पर संदेह जैसी बातें भी सशक्तिकरण में बाधा बनती हैं। इसीलिए महिला स्वयं सहायता समूह इन चुनौतियों को दूर करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सहायता कर सकते हैं।

महिला उद्यमियों के लिए प्रमुख सरकारी योजनाएँ

महिला उद्यमियों को प्रोत्साहित करने और उनका आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए भारत सरकार ने कई महत्वपूर्ण योजनाएँ शुरू की हैं। [9] इनमें से कुछ प्रमुख योजनाएँ इस प्रकार हैं:

1. महिला उद्यम निधि स्कीम

इस योजना का उद्देश्य महिला उद्यमियों को आर्थिक सहायता देना है। इसके तहत महिलाएँ अपना नया व्यवसाय शुरू करने या पहले से चल रहे व्यवसाय को बढ़ाने के लिए आसानी से ऋण (लोन) प्राप्त कर सकती हैं। इस योजना की खास बात यह है कि इसमें बहुत अधिक कागज़ी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं होती, जिससे महिलाएँ बिना झिझक अपना उद्यम शुरू कर सकें। [9]

2. स्टैंड-अप इंडिया योजना

इस योजना का मुख्य लक्ष्य महिलाओं और अनुसूचित जाति/जनजाति के लोगों को उद्यमिता अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना है। इसके तहत नई इकाइयों की स्थापना के लिए ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक का ऋण दिया जाता है। यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सक्षम बनाती है और उन्हें स्वयं का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित करती है। [10]

3. राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम (NSIC) की योजनाएँ

छोटे उद्योगों, खासकर महिलाओं द्वारा चलाए जा रहे उद्योगों को सहयोग करने के लिए, NSIC कई योजनाएँ प्रदान करता है। इस योजना के माध्यम से महिला उद्यमियों को मार्केटिंग सपोर्ट, स्किल डेवलपमेंट और आर्थिक मदद मिल सकती है। उनके उद्योगों की संभावनाओं को बेहतर बनाने के लिए, NSIC महिला उद्यमियों को बड़ी कंपनियों के साथ साथ संबंध स्थापित करने में भी सहायता करता है। [11]

4. महिला उद्यमिता प्लेटफॉर्म (WEP)

WEP सरकार की एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका मकसद महिला उद्यमियों के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार करना है जहाँ वे आसानी से व्यवसाय शुरू और संचालित कर सकें। इस प्लेटफॉर्म पर मेंटरशिप, नेटवर्किंग, वित्तीय सहायता से जुड़ी जानकारी जैसी सुविधाएँ उपलब्ध हैं। WEP के माध्यम से महिलाएँ अन्य उद्यमियों से जुड़कर अनुभव साझा कर सकती हैं और सीख सकती हैं। [3]

5. माइक्रो यूनिट्स डेवलपमेंट एंड रिफाइनेंस एजेंसी (MUDRA) स्कीम

मुद्रा योजना का मुख्य उद्देश्य छोटे और सूक्ष्म व्यवसायों को आर्थिक सहायता देना है। महिलाएँ इस योजना के तहत अपने छोटे व्यवसाय शुरू करने या विस्तार करने के लिए ऋण प्राप्त कर सकती हैं। इसका उद्देश्य छोटे उद्यमों के लिए पूंजी उपलब्ध कराना है, ताकि महिलाओं को व्यवसाय के लिए आवश्यक धन आसानी से मिल सके। [12]

तालिका 1: महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने वाली प्रमुख सरकारी योजनाओं का सार

योजना का नाम	वर्ष शुरू	उद्देश्य	लक्षित समूह
मुद्रा योजना	2015	बिना गारंटी के छोटे ऋण (माइक्रो-लोन) देना	महिला सूक्ष्म-उद्यमी
स्टैंड-अप इंडिया	2016	SC/ST और महिलाओं को ₹10 लाख से ₹1 करोड़ तक ऋण देना	SC/ST और महिलाएँ
स्टार्टअप इंडिया	2016	स्टार्टअप के लिए धन और सहयोग उपलब्ध कराना	महिलाओं द्वारा संचालित स्टार्टअप
स्किल इंडिया / PMKVY	2015	स्व-रोजगार के लिए कौशल प्रशिक्षण देना	अशिक्षित/अल्प-कुशल महिलाएँ
महिला ई-हाट	2016	ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से महिला उद्यमियों को बढ़ावा देना	महिला कारीगर और स्वयं सहायता समूह (SHGs)
उद्यम सखी पोर्टल	2018	महिला MSMEs को मार्गदर्शन और सहायता प्रदान करना	MSME क्षेत्र की महिलाएँ

महिलाओं की शिक्षा में बाधा बनने वाले कारण

आज़ादी के 75 साल बाद भी भारत में महिला सशक्तिकरण एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। महिलाओं की शिक्षा और सशक्तिकरण में कई कारण बाधा बनते हैं, जिनमें मुख्य रूप से शामिल हैं: [11]

- **माता–पिता की शिक्षा की कमी:** कई माता–पिता खुद कम शिक्षित होते हैं और वे लड़कियों की शिक्षा को ज़्यादा महत्व नहीं देते। इसी कारण लड़कियाँ अक्सर दूसरों पर निर्भर रह जाती हैं और आगे नहीं बढ़ पातीं।
- **लैंगिक असमानता:** भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक (पुरुष प्रधान) सोच के कारण

लड़कियों और लड़कों के बीच भेदभाव आज भी मौजूद है। कई लोग मानते हैं कि लड़की की शिक्षा पर खर्च करना बेकार है, क्योंकि शादी के बाद वह दूसरे घर चली जाएगी।

- **माता–पिता का नकारात्मक स्वभाव:** भारत में लड़कियों की शिक्षा को बढ़ावा देने में सबसे बड़ी बाधाओं में से एक है—पिताओं या परिवार के सदस्यों का नकारात्मक और संकुचित दृष्टिकोण। वे मानते हैं कि लड़कियों को ज़्यादा पढ़ाने की ज़रूरत नहीं है।.
- **जागरूकता की कमी:** सरकार लड़कियों की शिक्षा और सुरक्षा के लिए कई योजनाएँ चलाती है, लेकिन बहुत से लोग इन योजनाओं के बारे में जानते ही नहीं। जानकारी और जागरूकता की कमी के कारण वे इनका लाभ नहीं ले पाते। यही कारण है कि कई सरकारी योजनाएँ सही तरह लागू नहीं हो पातीं।
- **कम उम्र में शादी:** कई लड़कियों की शादी कम उम्र में कर दी जाती है, जिसके कारण वे स्कूल छोड़ देती हैं। यह वही समय होता है जब लड़कियों को प्राथमिक से माध्यमिक शिक्षा की ओर बढ़कर जीवन में आगे बढ़ने के अवसर मिलने चाहिए। लेकिन बाल विवाह के कारण वे पढ़ाई पूरी नहीं कर पातीं।
- **आर्थिक समस्या:** भारत की लगभग आधी आबादी गरीबी रेखा के नीचे रहती है। ऐसे में कई परिवार सभी बच्चों को समान रूप से शिक्षित नहीं कर पाते और वे लड़कियों की जगह लड़कों की पढ़ाई को प्राथमिकता देते हैं।

साहित्य समीक्षा

(Niyaz et al., 2021)[13] हालाँकि सरकार ने अल्पसंख्यक महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, लेकिन इन योजनाओं की प्रभावशीलता अभी भी संदिग्ध मानी जाती है। पूर्ण सशक्तिकरण के लिए महिलाओं का आत्मनिर्भर और आर्थिक रूप से स्वतंत्र होना ज़रूरी है, जो केवल वित्तीय सहायता से संभव है। इस अध्ययन का उद्देश्य यह जानना था कि अल्पसंख्यक महिलाओं में विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता और उनका उपयोग, उनके सशक्तिकरण को कैसे प्रभावित करता है। अध्ययन में पाया गया कि अल्पसंख्यक महिलाओं में सरकारी योजनाओं के प्रति जागरूकता बहुत कम है, जिसके कारण उनका समग्र विकास प्रभावित हुआ है। अध्ययन ने सुझाव दिया कि ग्रामीण क्षेत्रों में अल्पसंख्यक महिलाओं के लिए जागरूकता कार्यक्रम चलाना अत्यंत आवश्यक है।

(Bhosale, 2024) [14] स्वतंत्र भारत में महिला सशक्तिकरण का अर्थ है कि महिलाएँ सत्ता, निर्णय-निर्माण, सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में समान भागीदारी करें। इसका मतलब है कि महिलाओं को राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, शैक्षिक और औद्योगिक क्षेत्रों में समान अवसर मिलें। भारत सरकार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे—सरकारी महिला हॉस्टल, आधार गृह, रक्षा गृह, काउंसलिंग केंद्र, मनोधैर्या योजना, शुभमंगल सामूहिक विवाह योजना, कार्यरत महिलाओं के लिए वसतिगृह, प्रशिक्षण और रोजगार कार्यक्रम, स्वाधार और उज्ज्वला योजना। इसके साथ ही महिला आर्थिक विकास महामंडल, बचत समूह, भारत महिला बैंक और जेंडर बजटिंग जैसी पहलें भी लागू की गई हैं।

(Vijayalakshmi & Sahithyasree, 2023) [12] यह अध्ययन बताता है कि महिला उद्यमियों को सरकार द्वारा शुरू की गई योजनाओं और कार्यक्रमों के बारे में कितनी जानकारी है और उनका इन योजनाओं पर कितना प्रभाव पड़ता है। अध्ययन में यह भी विश्लेषण किया गया कि महिलाएँ उद्यमी बनने के लिए किन कारणों से प्रेरित होती हैं और व्यवसाय चलाते समय उन्हें किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। निष्कर्षों में पाया गया कि अधिकांश महिलाओं को मुद्रा लोन और अन्नपूर्णा योजना की जानकारी है। कई महिलाओं ने अपना व्यवसाय अपनी पूँजी से शुरू किया और लोन लेते समय धीमी प्रक्रिया जैसी समस्याएँ झेलीं। अधिकांश महिला उद्यमियों ने सरकारी प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग नहीं लिया, लेकिन व्यवसाय शुरू करने के बाद उनका आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ा और उन्हें सामान्य लाभ मिलने लगे।

(Choudhary, 2025) [10] पिछले दस वर्षों में भारत सरकार ने महिलाओं के उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं, जैसे—मुद्रा योजना, स्टैंड-अप इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, स्किल इंडिया, और महिला ई-हाट। इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को वित्त, कौशल विकास और बाज़ार से जोड़ने में मदद करना है, खासकर ग्रामीण और वंचित समुदायों की महिलाओं के लिए। यह अध्ययन 2015 से 2025 तक के सरकारी रिपोर्टों और सर्वेक्षणों से प्राप्त डेटा पर आधारित है। निष्कर्ष बताते हैं कि इन योजनाओं से महिला-नेतृत्व वाले व्यवसायों की संख्या बढ़ी है, लेकिन अभी भी योजनाओं की जानकारी की कमी, ऋण तक पहुँच की समस्या, डिजिटल साक्षरता की कमी और सामाजिक बाधाएँ चुनौतियाँ बनी हुई हैं। इस शोध में सुझाव दिए गए हैं कि योजनाओं का बेहतर क्रियान्वयन और अधिक जागरूकता आवश्यक है ताकि सभी महिला उद्यमियों तक लाभ पहुँच सके।

(Singh & Pande, 2023) [15] ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अपना अधिकतर समय घरेलू कामों में बिताती हैं, जिसके बदले उन्हें परिवार या समाज से कोई विशेष मान्यता नहीं मिलती। यह अध्ययन निम्न मध्यम वर्ग और कम आय वाली महिलाओं में वित्तीय समावेशन की आवश्यकता के प्रति जागरूकता को समझने के लिए किया गया। यह शोध पंजाब के लुधियाना जिले में 1000 महिलाओं पर आधारित था, जिनमें से 757 महिलाओं ने प्रतिक्रिया दी। डेटा का विश्लेषण ANOVA और पोस्ट-हॉक टेस्ट के माध्यम से किया गया। परिणामों में पाया गया कि जब महिलाएँ सशक्त होती हैं और आर्थिक गतिविधियों में शामिल होती हैं, तो इसका सकारात्मक प्रभाव वित्तीय समावेशन पर पड़ता है।

(SUBATHRA et al., 2021) [16] आज के समय में महिलाएँ वैश्विक व्यापार जगत का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी हैं और आर्थिक व सामाजिक विकास में अहम भूमिका निभा रही हैं। इसके बावजूद भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति कमज़ोर होने के कारण उनकी उद्यमी क्षमता का पूरा उपयोग नहीं हो पा रहा है। इस लेख का उद्देश्य भारत में महिला उद्यमियों की स्थिति को समझना और यह जानना है कि वे उद्यमिता क्यों चुनती हैं। साथ ही अध्ययन में सरकारी नीतियों का विश्लेषण भी किया गया है कि वे महिलाओं की उद्यमिता को बढ़ाने में कितनी मददगार हैं। अध्ययन में महिलाओं के उद्यमी बनने के प्रमुख कारण, उन्हें सहायता देने वाली संस्थाएँ और उद्यमिता से जुड़ी चुनौतियाँ शामिल हैं। अध्ययन के आधार पर महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कई सुझाव भी दिए गए हैं।

(Hegde & Malathi, 2025) [9] दुनिया की आधी आबादी महिलाएँ हैं, जिनमें अपार क्षमता है, परंतु आर्थिक विकास में उनका योगदान अभी भी सीमित है। देश के विकास में महिलाओं की भूमिका को मजबूत करने और तेज आर्थिक प्रगति हासिल करने के लिए उनकी शक्ति का सही उपयोग करना आवश्यक है। अधिकांश महिलाएँ उद्यमिता में कदम नहीं रखतीं। वीमेन एंटरप्रेन्योरशिप प्लेटफॉर्म (WEP) एक एकीकृत पोर्टल है, जो पूरे भारत की महिलाओं को एक जगह जोड़ता है और उनके उद्यमी सपनों को पूरा करने में मदद करता है। सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा महिलाएँ अपने व्यवसाय शुरू कर सकें, इसके लिए विशेष सहायता दी जाती है। महिला एवं बाल विकास विभाग भी आय-उत्पादक योजनाएँ चला रहा है। यह शोध राष्ट्रीय, राज्य और गैर-सरकारी स्तर पर मौजूद उन संस्थानों को समझने पर केंद्रित है, जो महिला उद्यमियों को सहायता प्रदान करते हैं।.

शोध के उद्देश्य

- महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सरकारी योजनाओं की भूमिका का अध्ययन करना।
- भारत में महिला सशक्तिकरण के महत्व को समझना।
- महिला उद्यमियों के लिए प्रमुख सरकारी योजनाओं का अध्ययन करना।
- महिला सशक्तिकरण पर सरकारी योजनाओं के प्रभाव के बारे में विभिन्न शोधकर्ताओं के दृष्टिकोण का विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

इस समीक्षा शोधपत्र में गुणात्मक शोध पद्धति का उपयोग किया गया है, जो द्वितीयक स्रोतों के विश्लेषण पर आधारित है। यह अध्ययन "महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने में सरकारी योजनाओं की भूमिका" विषय पर केंद्रित है। शोध के दौरान 2020 से 2025 के बीच प्रकाशित शोध-पत्रों, समीक्षा लेखों और कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग्स का व्यवस्थित रूप से अध्ययन किया गया। डेटा विश्वसनीय शैक्षणिक डेटाबेस, सरकारी रिपोर्टों और नीतिगत दस्तावेजों से एकत्रित किया गया, ताकि जानकारी सटीक और प्रमाणिक रहे। विश्लेषण में प्रमुख सरकारी योजनाओं, उनके कार्यान्वयन और महिलाओं के सशक्तिकरण व उद्यमिता पर उनके प्रभाव को समझने पर विशेष ध्यान दिया गया। यह शोध पद्धति विभिन्न पूर्व अध्ययनों की व्यापक समझ प्रदान करती है और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता और सीमाओं को स्पष्ट करती है।

निष्कर्ष

अंत में, अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने और उद्यमिता को बढ़ावा देने में सरकारी योजनाएँ बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। 'महिला उद्यम निधि योजना', 'मुद्रा योजना', 'स्टैंड-अप इंडिया', और 'वीमेन एंटरप्रेन्योरशिप प्लेटफ़ॉर्म (WEP)' जैसी योजनाओं ने महिलाओं को वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण और व्यवसायिक अवसरों तक पहुँच प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कम शिक्षित, निम्न और मध्यम वर्ग की महिलाओं की बढ़ती भागीदारी दर्शाती है कि इनमें जागरूकता और आत्मविश्वास बढ़ा है। परंतु इन योजनाओं को अधिक प्रभावी और दीर्घकालिक बनाने के लिए सरकार को जागरूकता अभियान मजबूत करने, आवेदन प्रक्रियाओं को सरल बनाने तथा सामाजिक संस्थाओं और मीडिया के साथ सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही निरंतर प्रशिक्षण, मेंटरिंग, तथा व्यापार मेलों और प्रदर्शनियों के

माध्यम से अनुभव बढ़ाना महिलाओं की उद्यमिता क्षमताओं को और सशक्त बना सकता है। अंततः, महिला उद्यमियों का सशक्तिकरण न केवल उनके व्यक्तिगत और आर्थिक विकास को बढ़ाता है, बल्कि सतत विकास और सामाजिक समानता के बड़े लक्ष्यों को प्राप्त करने में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है।

संदर्भ

[1] D. S. Saranya and D. K. Chandrasekar, "The impact of government welfare schemes on women empowerment in India," *Int. J. Manag. Commer.*, vol. 7, no. 1, 2025.

[2] D. P. Ambadas Pande and M. H. N. Tiwari, "Government Schemes: A tool for Women Empowerment," *B.Aadhar' Int. Peer-Reviewed Index. Res. J.*, 2023.

[3] D. R. Desai and D. J. Chaudhari, "WOMEN ENTREPRENEURS: A STUDY ON GOVERNMENT SCHEMES," *GAP Interdiscip.*, vol. 7, no. 2, 2024.

[4] D. B. B. Kalhapure, "A STUDY OF WOMEN EMPOWERMENT SCHEMES IN INDIA," *GAP BODHI TARU*, vol. 7, no. 2, 2024.

[5] S. Srivastava and D. V. Buchke, "Women's education and their economic condition in Madhya Pradesh, India," *Int. J. Home Sci.*, vol. 8, no. 3, 2022.

[6] S. Prakash, "Impact of Government Schemes on Women Empowerment in India," *Anukriti*, vol. 11, no. 10, 2021.

[7] A. PANDEY and A. PANDEY, "WOMEN EMPOWERMENT UNDER MADHYA PRADESH GOVERNMENT - AN OVERVIEW," *Innovare J. Educ.*, vol. 6, no. 1, 2018.

[8] A. PANDEY, "WOMEN'S EMPOWERMENT IN INDIA: POLICIES, IMPLICATIONS, AND IMPACT," *Innovare J. Soc. Sci.*, vol. 13, no. 4, 2025.

[9] M. P. Hegde and M. Malathi, "ROLE OF GOVERNMENT FOR PROMOTING WOMEN ENTERPRENUERS IN KARNATAKA STATE," *Int. Educ. Res. J.*, vol. 11, no. 5, 2025.

[10] Y. Choudhary, "ROLE OF GOVERNMENT SCHEMES IN PROMOTING WOMEN ENTREPRENEURSHIP IN INDIA," *EPRA Int. J. Multidiscip. Res.*, vol. 11, no. 9, 2025, doi: 10.36713/epra2013.

[11] M. Kumare and P. A. Dhurvey, "Impact of government schemes on the livelihood of tribal women in Madhya Pradesh," *Int. J. Humanit. Educ. Res.*, vol. 7, no. 1, 2025.

[12] D. D. Vijayalakshmi and M. S. R. Sahithyasree, "A Study on Impact of Government Schemes on Women Entrepreneurs in Coimbatore District," *YMER*, vol. 22, no. 11, 2023.

[13] Niyaz, A. Kulal, M. T. P., and A. Jaleel, "Impact of Government Welfare Schemes on Empowerment of Minority Women in Karnataka," *Int. J. Manag. Technol. Soc. Sci.*, vol. 6, no. 2, 2021.

[14] M. S. J. Bhosale, "Self - Reliant India and Women Empowerment," *Int. J. Adv. Res. Sci. Commun. Technol.*, vol. 4, no. 3, 2024.

[15] T. Singh and S. Pande, "INDIAN GOVERNMENT SCHEMES BASED ANALYSIS ON WOMEN EMPOWERMENT IN FINANCIAL INCLUSION," *Stud. Univ. "Vasile Goldis" Arad. Econ. Ser.*, vol. 33, no. 4, 2023, doi: 10.2478/sues-2023-0016.

[16] D. C. SUBATHRA, D. V. P. RATHI, and D. P. SINDHU, "WOMEN ENTREPRENEURS: A STUDY ON GOVERNMENT SCHEMES," *Ilkogr. Online - Elem. Educ. Online*, vol. 20, no. 5, 2021, doi: 10.17051/ilkonline.2021.05.99.